पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

कुंवर नारायण की कविता नचिकेता में अभिव्यक्त मिथकीय संदर्भ

प्रीति सिंह
विद्यार्थी, एम. ए., हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, सिक्किम
ईमेल: pritysngh007@gmail.com

शोध सारांश: बहुविध प्रतिभा के धनी कुंवर नारायण नयी कविता के दौर के विशिष्ट कवि माने जाते हैं। कुंवर नारायण अपनी रचनाशीलता में इतिहास और पौराणिक मिथक प्रसंग के माध्यम से वर्तमान को देखने के लिए जाने जाते हैं। उनके द्वारा रचित खंड काव्य 'आत्मजयी' का मूल कथासूत्र कठोपनिषद के दशवे स्कंध से लिया गया है, जो नचिकेता (पुत्र) एवं वाजश्रवा (पिता) के मिथकीय प्रसंग पर आधारित है। यह कविता आधुनिक चेतना का काव्य है,जिसमें नचिकेता और वाजश्रवा के मिथकीय प्रसंग के जरिये समाज की विसंगतियों के विरुद्ध आवाज को उठाया गया है साथ ही आधुनिक चिन्तनशील मनुष्य की विवशता और अकुलाहट को भी प्रकट किया गया है। 'नचिकेता' कविता में नचिकेता आधुनिक चिन्तनशील मनुष्य,नयी चेतना तथा नयी पीढ़ी का प्रतीक है,जिसे पुरानी पीढ़ी अपनी पुरानी रूढ़िवादी मान्यताओं के आधार पर दबाना चाहती है,वहीं वाजश्रवा ठहरे हुए मूल्य के वाहक पीढ़ी अर्थात् पुरानी पीढ़ी का प्रतीक है। इस कविता में दो पीढ़ियों के द्वंद्व के माध्यम से युगीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं पर व्यंग्य किया गया है।

जिज्ञासु नचिकेता जीवन और मृत्यु के सत्य को जानना चाहता है तथा रूढ़ियों का विरोध कर सवाल खड़े करता है और नैतिक मूल्यों की स्थापना करता है। वह समाज के भौतिक एवं सांसारिक सुख - सुविधा को क्षणिक सुख की संज्ञा देता है। 'नचिकेता' कविता जीवन को सुखी बनाने की अपेक्षा सार्थक बनाने का पक्ष लेता है।

सूचक शब्द: मिथकीय प्रसंग, सार्थक, आधुनिकता बोध, जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य, पीढ़ियों का द्वंद्व

मूल लेख

नयी कविता के विशिष्ट कवि होने के नाते कुंवर नारायण अपने समकालीन समाज में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में व्याप्त मोहभंग की स्थिति के कारण फैलती विसंगतियों को ध्यान में रखते हुए अपनी रचनाओं में

काल चेतना, जीवन की वास्तविकता के साथ-साथ अस्तित्व की खोज की है। इसका बेहतरीन उदाहरण 'नचिकेता' कविता है, जो तर्क और संवेदना के धरातल पर समय का आंकलन करती है।

हिंदी साहित्य में पौराणिक मिथकीय आख्यानों और उन आख्यानों से जुड़े पात्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं, क्योंकि वे पौराणिक मिथकीय पात्र सकारात्मक हो या नकारात्मक, उनकी उपस्थिति आज भी हमारे समाज में किसी न किसी रूप में बनी हुई है। यह सत्य है कि समय सापेक्ष मिथक अपनी व्याख्या बदलते रहते हैं। पौराणिक मिथक आख्यानों में जो जीवन सन्दर्भ और सवाल उठाये गए हैं, यदि कोई रचनाकार उस ऐतिहासिक घटना को वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में नयी दृष्टि से लिखता है तो वह मिथकीय प्रसंग समय सापेक्ष अपनी व्याख्या बदल लेते हैं। जिस प्रकार वाल्मीकि के राम, कालिदास के राम, तुलसी के राम व निराला के राम एक जैसे नहीं हैं क्योंकि मिथकीय पात्र राम समय सापेक्ष अपनी व्याख्या बदलते आए हैं। ठीक उसी प्रकार कठोपनिषद के दसवें स्कंध से लिया गया आत्मजयी के नचिकेता प्रसंग में भी कवि कुंवर नारायण ने समयानुसार परिवर्तन किया है। 'आत्मजयी' की भूमिका में कवि ने स्वीकार भी किया है कि"कठोपनिषद से लिए गए नचिकेता के कथानक में मैंने थोड़ा परिवर्तन किया है, लेकिन इतना नहीं कि आधार- कथा की वस्तुस्थितियाँ ही भिन्न हो गयी हों। कथा को आधुनिक ढंग से देखा गया है,पौराणिक दिव्य-कथा के रूप में नहीं।'' (नारायण, 1965, पृ. 09)

मिथक हमारे मानसिक संरचनाओं को व्यक्त करने का एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में प्रस्तुत होता है। भारतीय पौराणिक कथाएँ आरम्भ से ही रचनाकारों को आकर्षित करती रही है। 'नचिकेता' कविता का मिथकीय पात्र नचिकेता इस दृष्टि से महत्वपूर्ण बन पड़ा है कि उसमें आधुनिक जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों को अभिव्यक्त करने की व्यापक सम्भावना निहित हैं। 'आत्मजयी' की भूमिका में कुंवर नारायण ने लिखा है कि"नचिकेता का प्रसंग इस दृष्टि से मुझे विशेष उपयुक्त लगा कि वह मुख्यत: धार्मिक क्षेत्र का न होकर दार्शनिक क्षेत्र का ही रहा, जहाँ वैचारिक स्वतंत्रता के लिए अधिक गुंजाइश है।" (नारायण, 1965, पृ. 11) मिथक की स्वायत सत्ता के कारण ही कुंवर नारायण नचिकेता के स्वतंत्र व्यक्तित्व को उभार पाने में सफल हो सके हैं। नचिकेता वस्तुतः उस "नयी पीढ़ी का प्रतीक है जिसमें निरंतर प्रश्न करने तथा उन प्रश्नों के उत्तर पाने की बेचैनी है।" (पालीवाल, 1975, पृ. 25) वहीं पिता वाजश्रवा ठहरे हुए मूल्य के वाहक पीढ़ी अर्थात् रुढ़िवादी मानसिकता का गुण समाहित किये हुए पुरानी पीढ़ी का प्रतीक है, जो अपने निर्णयों एवं मान्यताओं को नचिकेता पर लादना चाहता है। नचिकेता आधुनिक चिन्तनशील मनुष्य के रूप में उभरता है जो भौतिकता, विलासिता और निहित स्वार्थों के पीछे अंधी दौड़ में शामिल लोगों की दुनिया में जीवन के विशिष्ट अर्थों की तलाश करता व्यक्ति है। पिता पुत्र के इस द्वंद्व के माध्यम से कवि ने दो पीढ़ियों के द्वंद्व को तो दर्शाया ही है, साथ हीजीवन के प्रति दो भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण एवं मानसिकता को भी चित्रित किया है। 'आत्मजयी' की भूमिका के आरम्भ में ही कुंवर नारायण मिथकीय पात्र नचिकेता की विशेषता बताते हैं कि "आत्मजयी में उठाई गयी समस्या मुख्यतः एक विचारशील व्यक्ति की समस्या है। कथानक का नायक नचिकेता मात्र सुखों को अस्वीकार करता है : तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति भर ही उसके लिए पर्याप्त नहीं। उसके अन्दर वह बृहत्तर जिज्ञासा है जिसके लिए केवल सुखी जीना काफ़ी नहीं, सार्थक जीना जरूरी है। यह जिज्ञासा ही उसे उन मनुष्यों

की कोटि में रखती है, जिन्होंने सत्य की खोज में अपने हित को गौण माना, और ऐन्द्रिय सुखों के आधार पर ही जीवन से समझौता नहीं किया, बल्कि उस चरम लक्ष्य के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया जो उन्हें पाने के योग्य लगा।" (पालीवाल, 1975, पृ. 5)

नचिकेता एक मिथकीय पात्र है जिसका इतिहास कोई प्रमाण नहीं देता है। लेकिन मिथकीय पात्र होते हुए भी उसकी कथा मनुष्य के अन्दर जो जिज्ञासा या ज्ञान पाने की चाह होती है, उसे अभिव्यक्त करती है। 'नचिकेता' कविता में मिथक के जरिये समाज के विषमताओं के विरुद्ध आवाज उठाया गया है। इस कविता में जो दो पीढ़ियों का टकराव है उसे समाजवादी और व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के रूप में भी देखा जा सकता है। यदि सदियों से चली आ रही रुढ़िवादी परंपरा या बासी परंपरा से कोई असहमति व्यक्त करता है तथा किसी का अनुभव उससे इतर है तो 'नचिकेता' कविता उस असहमति और अनुभव को सुनने और समझने के लिए प्रेरित करती है। नचिकेता यह बताता है कि बिना उस असहमति को समझे उसे विधर्मी या गलत कहना उचित नहीं है। 'नचिकेता' कविता में नचिकेता अपने पिता वाजश्रवा से असहमति की स्वीकार्यता तथा सहिष्णुता को आचरण का अंग बनाने को कहता है-

"असहमति को अवसर दो। सहिष्णुता को आचरण दो
कि बुद्धि सिर ऊँचा रख सके ....
उसे हताश मत करो काइयाँ तर्कों से हरा- हराकर। " (पालीवाल, 1975, पृ. 25)

नचिकेता का चरित्र वैचारिक दृष्टि से सत्य को जानने के लिए व्याकुल है। वह उस चेतना को मनुष्य में जागृत करना चाहता है जिससे मनुष्य जीवन के वास्तविक सत्य को जान सके समझ सके। सत्य की प्राप्ति आसानी से नहीं होती है। मिथकीय पात्र नचिकेता की भांति इतिहास में जिन लोगों ने समाज की मान्यताओं के विरुद्ध जाकर सत्य की खोज की, समाज के विपरीत जिनका अनुभव रहा, जो सत्य को जानना चाहते थे तथा जो जीवन को सार्थक बनाना चाहते थे, वे सदा समाज के विपरीत रहे हैं। बुद्ध, महावीर तथा कबीर जैसे कई महान आत्माओं ने सत्य का अनुभव किया। ये सभी महान आत्माएँ समाज के विपरीत रही। 'नचिकेता' कविता में नचिकेता भी समाज की जड़वादी मान्यताओं के खिलाफ़ संघर्ष करता है क्योंकि सत्य हमेशा व्यक्तिगत होता है, वह कभी सामूहिक नहीं होता। सत्य हमेशा विद्रोही होता है-

"आह, तुम नहीं समझते पिता, नहीं समझना चाह रहे,
कि एक- एक शील पाने के लिए
कितनी महान आत्माओं ने कितना कष्ट सहा है ....
सत्य, जिसे हम सब इतनी आसानी से अपनी -अपनी तरफ़ मान लेते हैं, सदैव
विद्रोही- सा रहा है !" (पालीवाल, 1975, पृ. 25)

'नचिकेता' कविता मानवीय मूल्यों की स्थापना करना चाहता है। "नचिकेता को पिता का रूढ़ जीवन मार्ग बासी लगता है।" (सौरभ, 2021, पृ. 132) वह नयी पीढ़ी का प्रतीक है इसलिए वह रीति-नीति तथा धर्म

के नाम पर उसके पिता और संपूर्ण समाज में हो रहे आडम्बरों का विरोध करता है जिसमे मनुष्यता मरती है। नचिकेता धर्म के नाम पर पशुबलि और दिखावे का विरोध करता है-

"यह सब धर्म नहीं-धर्म सामग्री का प्रदर्शन है !
अन्न, घृत, पशु, पुरोहित, मैं ....
शायद इस निष्ठा में हर सवाल बाधा है
जिसमे मनुष्य नहीं अदृश्य का साझा है !" (नारायण, 1965, पृ. 26)

'नचिकेता'कविता मनुष्य की भौतिकवादी मानसिकता को उद्घाटित करता है। मानव भौतिक सुखों से अपने जीवन को सुखी बनाना चाहता है। यह भौतिक सुखों से जीवन को सुखी बनाने की जो मान्यता समाज में व्याप्त है वह संपूर्ण सृष्टि के उद्देश्य की हत्या का परिचायक है। मानव की उत्पत्ति के पीछे छिपे उद्देश्य की हत्या है। नचिकेता का चरित्र यह बयान करता है कि "मृत्यु बोध के भयानक संत्रास में ही जीवन की सच्ची प्रतीति होती है। उसकी दृष्टि से जिस जीवन में भौतिक सुख से ऊपर उठने की कोई कल्पना या वैशिष्ट्य नहीं है वह जीना मृत्यु से बुरा है।" (सौरभ, 2021, पृ. 133)

"इन्द्रासन का लोभ,
प्रत्येक जीवन
मानो किसी असफल षड्यंत्र के बाद
पूरे संसार की निर्मम हत्या है। " (नारायण, 1965, पृ. 28)

'नचिकेता' कविता का मिथकीय पात्र नचिकेता एक चिन्तनशील विचारवान पात्र है। वह व्यवस्था द्वारा बनाये गए संकट के चक्रव्यूह को तोड़ना जानता है। वह जीवन की सार्थकता चाहता है, आस्था नहीं। मृत्यु के बोध में व्यक्ति अकेला तथा असहाय रह जाता है। मृत्यु के भय में उसे भौतिक सुख कोई सांत्वना नहीं दे पाता है। इसलिए नचिकेता बहुजीवन को जानने की जिज्ञासा रखता है। मसलन-

"क्योंकि व्यक्ति मरता है
और अपनी मृत्यु में वह बिल्कुल अकेला है,
विवश
असान्त्वानीय। " (नारायण, 1965, पृ. 27)

इस प्रकार नचिकेता के सम्मुख जो समस्याएँ हैं, वही समस्याएँ आज के आधुनिक चिन्तनशील मनुष्य के सम्मुख भी है। इसी कारण नचिकेता आधुनिक मानव की जटिल मनःस्थिति और आधुनिक चिन्तनशील मनुष्य का प्रतीक बनकर आता है। नचिकेता की भांति ही आज का नव युवक पुरानी पीढ़ी तथा शाशन व्यवस्था द्वारा दबाया जा रहा है। 'नचिकेता' कविता में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में दो पीढ़ियों के बीच के द्वंद्व को दर्शाया गया है। इस कविता में आज के युग मानस अर्थात् आधुनिक चिन्तनशील मनुष्य की विवशता तथा अकुलाहट स्पष्ट प्रकट होती है। अतः कुंवर नारायण ने 'आत्मजयी' के 'नचिकेता' कविता में नचिकेता के मिथकीय प्रसंग के माध्यम से मानव जीवन की सार्थकता को उजागर करने का प्रयास किया है। कुंवर नारायण

इस कविता में मिथकीय चेतना को उद्घाटित करते हैं। इस कविता में नचिकेता जनमानस में जीवन मूल्य तथा सार्थक जीवन के तमाम पहलुओं को उद्घाटित करता है और मानव समाज में जीवन को सार्थक बनाने की चेतना का प्रसार करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कुंवर नारायण. (1965). आत्मजयी.नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन.

पालीवाल, कृष्णदत्त. (1975). नया सृजन नया बोध. दिल्ली : राजेश बुक सेंटर.

सौरभ,सुस्मित. (2021). मिथक और कुंवर नारायण.जयपुर: बोधि प्रकाशन.